

थली-मन्दिर प्रकाशन, दरभंगा

हनुमानबाहुक तुलसीदास



From archive of Dr.
Ramdeo Jha

TULASIDASA

श्री सुरेन्द्र झा

HANUMANABAHUKA

थली-रूपान्तरकार— श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

Scanned by Vijay Deo Jha

गोस्वामी तुलसीदास कृत

हनुमानबाहुक

[डा० श्रीमधुसूदन ठाकुर कृत हिन्दी-गद्यानुवाद समन्वित]

मैथिली पद्यानुवादक

श्री सुरेन्द्र का 'सुमन'

अध्यक्ष, मैथिली विभाग (मिथिला विश्वविद्यालय)

21/11/2011

श्रावण शुक्ला ७ मी; : तुलसी-शताब्दी-१६७३

संस्करण प्रेरक-

डा० मधुसूदन ठाकुर

भू० पू० अंग्रेजी व्याख्याता, पटना विश्वविद्यालय

सांस्कृतिक प्राध्यापक, विश्वविद्यालय, कनाडा

अंग्रेजी संस्करण (डा० ठाकुर)

मूल्य-भारतमे ३.०० : नेपालमे ४-(N.c.)

ब्रिटेनमे 10 शिलिंग : अमेरिका-कनाडा \$1.25०

मैथिली संस्करण (१९७३)

‘सुमन’

मूल्य : २.००

प्रकाशक--मैथिली मन्दिर; दरभंगा

मुद्रक--मिथिला प्रेस, दरभंगा

आवरण कलाकार--श्रीनृपेन्द्र राय

निवेद्य

संत-कवि अथवा कवि-संत दूनू क्रम-विशेषण जनिकामे उपयुं परि, गोस्वामी पदे जनिक जितेन्द्रियता अथवा वाग्बल्यता सिद्ध - प्रसिद्ध, नामानुकूल तुलसीक पवित्रता जनिकामे युक्त-उपयुक्त, दास्यभावे जनिक 'दास' नामांत नितांत सदर्थ-अन्वर्थ--हुनकाहि रचना थिक 'हनुमान-बाहुक'। हनुमानक बाहुक आश्रयसं बाहुक पीडा कोना गड़ायल से ध्वनित होइछ सन्तकविक ध्वनिमे--'सपथ महावीरकी जो रहै पीड़ बाहुकी ?

जिज्ञासा उठि सकैछ जे निष्काम भक्तिपथक अनन्य पथिक गोस्वामी जो कोना रोगपीड़ा दूर करबाक कामे बाहुकक स्तुति-छन्दक प्रयोग कयल। किन्तु जे शरीरके मन्दिर मानि, ओहिमे आराध्यके प्रतिष्ठापित कयने छथि हुनका हेतु रोग-रागक मालिन्य मन्दिरमे रह्य देवो कोना सह्य ? ते सकाम रहितहु निष्कामे।

पाथिव तुलसीदलक परससँ जखन असत्य अनुच्चरित होइछ, शुष्क तुलसीक शाखाखंडक कणिकामाला धारणहिसँ जखन हिसा निवृत्त होइछ, तखन अध्यात्मिक तुलसीक स्तवनवचने रोग-ताप पाप-कलापक सत्ता कतय ? श्रद्धालुक आस्था-अनुभूति स्यतः प्रमाणित अछि--'भवति रसना मात्र विषयः'। मधु-माखनक स्वाद निर्वचने नहि रसनेसँ भेटैछ--वर्ण, संकेते एकर शाब्दबोध नहि कराओल जा सकैछ।

'यावद् गंगा च गोदा च' वा 'यावत् सिन्धुहिमालयो' अथवा 'यावच्चन्द्र-दिवाकरौ' छथि एवं भारतीय धर्म-संस्कृति ज्ञान उपासना ओ विचारधाराक सत्ता इयत्ता अछि, रामकृष्णक नाम, अंकर हनुमानक ध्यायन कियते रहत एवं तुलसीक सम्मान होइते रहत। तुलसी कोनो युगक, कोनो जमा विशेषक अथवा कोनो वर्ग सम्प्रदायक नहि छथि। ई तँ

‘याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः’ शाश्वत मन्त्रद्रष्टा ओ
 रिरन्तन भावअष्टा ऋषि कवि मान्य छथि । हुनकहि अन्तिम जीवन-
 खण्डक वेदनाद्रवित ई उद्गार हनुमानबाहुक मे निहित अछि जकर
 मंथिनीमे रूपान्तरित करबाक सहसा सादसी भेलहुं । प्राचीन कविगुरु
 कानिदास-मारवि-माघहुक रचनाक अनुगान कयल अछि, आधुनिक
 कवीन्द्रहुक पुरमे सुर मिलाभोज अछि किन्तु गोस्वामीजीक पद-स्पर्श कबामे
 भाव-कम्पित छी । बाहु गहथु स्वयं बाहुककार अथवा हुनक रचनामंजरीक
 कोनो श्याम अभि राम भभरा, वा उनटि पुनटि सबतरि राम भभरा
 देखनिहार कोनो ‘कवीश्वर-कपीश्वरौ’ !

तुलसीशताब्दीक पावन वर्ष । एक दिन अकस्मात् मधुसूदन ठाकुर
 (आश्रम सिंहवाड़ा जे देश-विदेशक उच्चतर विश्वविद्यालयमे ‘अधीतमध्या-
 पितमजितं यशः’ चरितार्थ कयने छथि, हनुमानबाहुकक स्वयंरचित अंग्रेजी
 संस्करण दय, प्रसंगवश मैथिलियहुमे रूपान्तरित करबाक प्रेरणा देल ।
 मनहिमन काँपि उटलहुं; किन्तु नकारि नहि सकलहुं । जेना तेना अनुरोध
 बालन कयल । की केहन भेल, से हम स्वयं नहि जनैत छी; जनैतछी एतवे
 जे एहिमे जाबा क्षण लागल से भगवत्कृपाक प्रसादवत् पावन प्रतीत
 भेल । हम एतवे कहय चाहैत छी, एतवे कहियो सकैत छी —

‘तत्तदखिलं देव त्वदाराधनम्’ ।

—सुरेन्द्र भा ‘सुमन’

(मिथिला-विश्वविद्यालय)

दरभंगा : श्रावण शुक्ला ७मी

(१)

॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥

॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥

॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥

॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥

॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥

॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥

हनुमान बाहुक

मूल (अवधी)—गो० तुलसीदास

रूपान्तर (मैथिली)—‘सुमन’

हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥
हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥
हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥
हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥
हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥
हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥
हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥
हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥
हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥
हनुमान् चालीस शतकं ॥ हनुमान् चालीस शतकं ॥

(२)

(१)

सिंधु-तरन सिय-सोच-हरन रवि बाल-बरन तनु ।
भुज बिसाल मूरति कराल कालहु को काल जनु ॥
गहन - दहन - निरदहन - लंक निःसंक बंकभुव ।
जातुधान - बलवान - मान - मद - दबन पवनसुव ॥

कह तुलसिदास सेवत सुलभ सेवक हित संतत निकट ।
गुन गनत नमत सुमिरत जपत समन सकल संकट विकट ॥

समुद्र को पार करनेवाले, सीता के शोक को हरनेवाले, बाल सूर्य के रङ्ग के शरीरवाले, लम्बी भुजाओं वाले, जिनकी मूर्ति ऐसी भयङ्कर है जैसे काल के भी काल हों, अशोक वाटिका का नाश करने वाले, लङ्का को जलानेवाले, निडर, टेढ़ी भौंहोंवाले पवनपुत्र हनुमान बलवान राक्षसों का मानमद चूर करनेवाले हैं । तुलसीदास कहते हैं किये सेवा करने से सहज में प्राप्त होते हैं और सदा अपने सेवकों की भलाई करने को प्रस्तुत रहते हैं । इनका गुणगान, नमस्कार, स्मरण और जप सारे कठिन संकटों को दूर करता है ।

(२)

[१]

करइत सागर पार, हरल

सिय हिय दुख भारे ।

तरुन तरनि सन अरुन

वरन तन पवनकुमारै ॥

भुज विशाल रूपहु कराल

जनि काल क काले ।

डाहि वंक लंकहु भुवंक

निर्भय जग - जाले ॥

गर्व खर्व उद्धत खल क

करइत नित जनहित प्रगट ।

जय कपि ! जपि जनि नाम गुन

पद भुकि संकट विकट हट ॥

(३)

(२)

स्वर्ण - सैल - संकास कोटि - रवि - तरुन - तेज - घन ।
उर विसाल भुजदंड चंड नाख बज्र बज्र तन ॥
पिंग नयन भृकुटी कराल रसना दसनानन ।
कपिस केस करकस लँगूर खल - दल - बल - भानन ॥
कह तुलसीदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट ।
सन्ताप प्राप तेहि पुरुष कहँ सपनेहुँ नहि आवत निकट ॥

सोने के पहाड़ जैसे शरीर से करोड़ों तरुण सूर्य का तेज प्रकट हो रहा है। इनकी छाती चौड़ी है, भुजदण्ड प्रचण्ड हैं, नाखून तथा शरीर बज्र के समान हैं, आँखें पीली, भौहें डरावनी हैं, जीभ, दाँत, और मुख सभी भयङ्कर हैं, बाल भूरे हैं, पूँछ बड़ी मजबूत है, दुर्जनों के समूह का बल तोड़नेवाली है। तुलसीदास कहते हैं कि हनुमान की ऐसी भयङ्कर मूर्ति जिसके हृदय में बसती है, दुःख और पाप उसके पास स्वप्न में भी नहीं फटकते।

(४४)

[२]

गिरि सुमेरु सन शुचि सुवरन

अगनित रवि छवि घन ।

उर उदार, भुज युग विशाल

नख चोख कुलिश तन ॥

विदित पिंग दग विकट भृकुटि

मुख जीह दंत दुति ।

रुच्छ पुच्छ कपि कपिश केश

खल दल ज्वाला हुति ॥

पुजि तुलसी शुचि सुमन जे

धरथि ध्यान हनुमान पद ।

तनि लग नहि सपनहु खनहु

पाप ताप भय दुख बिपद ॥

((५२))

(३)

पंचमुख छमुख भृगुमुख्य भट,
असुर - सुर - सर्व - सरि समरत्थसूरो ।
बाँकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली,
वेद बन्दी बदत पैज पूो ॥
जासु गुन गाथ रघुनाथ कह जासु बल
बिपुल जल भरित जग जलधि भूरो ।
दीन दुख दमन को कौन तुलसीस है,
पवन को पूत रजपूत रूरो ॥

शिव, कार्तिकेय, भृगुकुल के प्रधान भट परशुराम, राक्षस और देवता आदि वीरों में हनुमान समर्थ वीर हैं । वे बड़े बाँके वीर प्रसिद्ध यशवाले हैं । वेद और बन्दी कहते हैं कि वे प्रतिज्ञा पूरी करने वाले हैं । जिनकी गुणगाथा श्रीराम ने स्वयं कही है, वे हनुमान बल के समुद्र रूप हैं और संसार रूपी समुद्र बलरूपी जल से सूखा है । दीनों के दुख दमन करने वाले तुलसी के स्वामी कौन हैं ? पवनपुत्र सुन्दर राजपुत्र हनुमान ही हैं ।

(६)

[३]

शिव पंचानन षण्मुख

सुर क प्रमुख सेनानी ।

भृगु - कुल - कमल - पतंग

परशुधर, असुर गुमानी ॥

क्यौ केहनहु भट विकट

भिड़थु बल नदी तरंगे ।

बिन्दु बनल जत सिन्धु

विदित बल वचन अभंगे ॥

श्रुति वंदी गावधि विरुद्ध

साखी परतख रघुकुमार ।

तनि सन के खल दल दलन

पवन - पूत रजपूत वर ।

(७)

(४)

भानु सो पढ़न हनुमान गये भानु मन,
अनुमानि सिसु केलि कियो फेरफार सो ।
पाछिले पगनि गम गगन मगन मन,
क्रम को न भ्रम कपि - बालक-बिहार सो ॥
कौतुक बिलोकि सुरपाल हरि हर बिधि,
लोचननि चकाचौधी चित्तनि खँभार सो ।
बल कैधों बीररस धीरज कै साहस कै,
तुलसी सरीर धरे सक्नि को सार सो ॥

हनुमान बाल्यकाल में सूर्य से विद्या पढ़ने गये । सूर्य ने मन में सोचा, यह हमारे साथ कैसे चलकर पढ़ सकेगा भला ! हनुमान खिलवाड़ से उलटी चाल चलने लगे । आकाश में प्रसन्नता से पीछे के बल चले । उन्हें बिना किसी भ्रम के ऐसा कौतुक करते देख इन्द्र, विष्णु, शिव और ब्रह्मा के नेत्रों में चकाचौंध आने लगी और चित्त में घबड़ाहट हो गई । तुलसी दास कहते हैं कि वे सब कहने लगे— क्या यह मूर्तिमान बल है, वीर-रस है, धीरज है, साहस है या सब के सार ने शरीर धारण किया है ?

(५)

[४]

मानुमान सँ पढ़य चलल

पवमान - कुमारे ।

बुझि अबूझ शिशु टारि चलल

नभ पथ रथ चारे ॥

रवि गुरु दिस रुख राखि

समुख मुख पद पछुआरे ।

अमहु न गति क्रम कमल

छकित दिगपति लखि द्वारे ॥

बल धरज साहस सभ क

सार सहज साकार ई ।

तेज ओजहि क खोज हित

द्रुत परिणत गति शक्ति की ?

(६)

[५]

भारत में पारथ के रथकेतु कपिराज,
गज्यो सुनि कुरुराजदल हलबल भो ।
कह्यो द्रोण भीष्म समीरसुत महावीर,
वीर रस बारिनिधि जाको बल जल भो ॥
बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लगि,
फलँग फलँग हू तें घाटि नमतल भो ।
नाइ-नाइ माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं,
हनुमान देखे जगजीवन को फल भो ॥

महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ की पताका पर हनुमान आ विराजे । उनकी गरज सुन कर कौरव सेना में खलबली मच गई । द्रोण और भीष्म ने कहा, पवनतनय हनुमान बड़े दलवान्त हैं, जिनका बल युद्धरूपी सागर का जल है । वानर-स्वभावसे पृथ्वी से लेकर सूर्य तक कूदने में आकाश एक फलँग से भी कम हुआ । योद्धा लोग हाथ जोड़ जोड़कर और सिर झुका-झुका कर हनुमान का दर्शन करते हैं और कहते हैं, “हनुमान के दर्शन से हमारा जन्म लेना सफल हुआ” ।

(१०)

[५]

महा-भारत क युद्ध, जुब्ध

कौरव दल उद्धत ।

सुनि अर्जुन-रथ केतु वपिक

गर्जन सभ कंपित ॥

भष्म द्रोण सभ कोन दाबि

कहि रहल देखु भल ।

रन रस घन आसार,

वीरता वारिधि कपि बल ॥

महिमा महि मे जान सब

उछलि गगन रवि पथ चढ़ल ।

छथि हनुमान महान बुझि

नत-शिर लह सब जनम फल ॥

(११)

— २१५६७७१ —

[६]

गोपद पयोधि करि होलिका ज्यों लाय लंक,
निपट निसंक पर पुर गलबल भो ।
द्रोन सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,
कंदुक ज्यों कपि खेल-बेल कैसो फल भो ।
संकट समाज असमंजस में रामराज,
काज जुग पूगनि को करतल पल भो ।
साहसी समस्थ तुलसी को नाह जाकी बाँह,
लोकपाल पालन को फिरि थिर थल भो ॥

समुद्र को पार कर लङ्का को होखी की तरह जला डाला,
राक्षसों के नगर में भी खलबली मच गई, फिर भी हनुमान
निर्भय, निःशंक ही रहे । द्रोण के समान भारी पहाड़ खिलवाड़
में ही उखाड़ गेद के समान हाथ में ले लिया जैसे बेल का फल
हो । सारा वानर समाज संकट में पड़ा था और स्वयं राजा
राम दुबिधा में थे, ऐसे समय में युगों का काम हनुमान के हाथ
पल भर में पूरा हुआ । ऐसे साहसी और समर्थ हनुमान तुलसी
के स्वामी हैं, जिनके बल से लोकपालों का पालन हुआ और
पृथ्वी फिर स्थिर हुई ।

(१२)

[६]

गो - खुरहि क परिमान

महासागर जनिका लग्न ।

कनकमयी लंका क

होलिका दाह छनहि कय ॥

हलचल देल मचाय

बेल कंदुक लहु क्रीड़ा ।

द्रोणाचलहु उठाय

हल रघुवीर क पीड़ा ॥

युग क काज साधल पलहि

भुज बल साहस सिद्ध जे ।

लोकपाल पद थापि थल

नाथ त्रिलोक प्रसिद्ध से ॥

(४१३)

[७]

कमठ की पीठ जाके गोड़िन की गाड़ै मानौ,
 नाप के भाजन भरि जलनिधि जल भो ।
 जातुधान दानव पावन को दुर्ग भयो,
 महामीनबास तिमि - तोमनि को थल भो ॥
 कुम्भकर्ण रावन पयोदनाद इंधन को,
 तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो ।
 भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान,
 सारिखो त्रिलोक न त्रिकाल महाबल भो ॥

हनुमान के कूदने से कच्छप की पीठ में ऐसा भारी गढ़ा हो गया जैसे समुद्र का जल नापने का पात्र हो । राजसों के भाग कर शरण लेने का वह दुर्ग बना और बड़ी भारी मछलियों के समुदाय का घर बन गया । तुलसीदास कहते हैं कि हनुमान का प्रबल प्रताप कुम्भकर्ण, रावण और मेघनाद रूपी इंधन के लिए आग है । भीष्म कहते हैं कि मेरे अनुमान में तीनों लोक और तीनों काल में हनुमान के समान बलवान कोई नहीं हुआ ।

[७]

कमठ पीठ पद चाप धसल

जल सिन्धु नपायल ।

जनि भय दानव दल पड़ाय

जल दुर्ग नुकायल ॥

महामीन बसि गेल,

तिमिमिल दलहुक अंगन ।

जनि प्रताप बडवानल

रावन दल - बल ईधन ॥

आन न क्यौ हनुमान सन

त्रिजग त्रिकालहु शक्तिधर ।

वृद्ध भीष्म अनुवि कहल

कपि केतुक भारत समर ॥

(१५)

[८]

दूत रामराय को सपूत पूत पौन को तू,
अंजनी को नन्दन प्रताप भूरि भानु सो ।
सीय सोच समन दुरित दोष दमन,
सरन आये अवन लखन प्रिय प्रान सो ॥
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो,
प्रगत त्रिलोक ओक तुलसी निधान सो ।
ज्ञान गुणवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥

रामदूत. पवन के सुपुत्र. अपनी माता अंजनी को आनन्द देनेवाले, अनेकों सूर्य के प्रताप वाले, सीता के सोच को शान्त करने वाले, दोषों को नष्ट करने वाले, शरण में आए हुए के रक्षक, लक्ष्मण को प्राणों से प्रिय, रावणरूपी दुसह दरिद्रता का दलन करने वाले, गुणवान, बलवान, ज्ञानवान, सेवा में सावधान, ऐसे हनुमान जैसे चतुर स्वामी का ध्यान करो ।

[८]

रघुवीर क जे दूत, पूत
जग विदित समीर क ।
अंजनी क नंदन, वन चन्दन
मलय समीर क ॥
तेज निधान भानु जनु,
सिय दुख तिमिर क चाने ।
दशमुख दनुज तृन क
दल दहन कृशानु प्रमाने ॥

शरण अशरण क, त्रिभुवन क
त्राण, लक्ष्मण क प्राण पुर ।
बल वैभव गुन ज्ञान धुर,
धरु हनुमान क ध्यान उर ॥

(१५)

दवन दुवन दल भुवन विदित बल,
 वेद जस गावत बिबुध वंदीछोर को ॥
 पाप ताप तिभिर तुहिन विघटन पटु,
 सेवक सरोरुह सुखद भानु भोर को ॥
 लोक परलोक तें बिलोक सपने न सोक,
 तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को ॥
 राम को दुलारो दास वामदेव को निवास,
 नाम कलि कामतरु केसरी किसोर को ॥

राक्षसदल का दमन करने वाले हनुमान का बल सारे संसार में प्रकट है । देवताओं को कैद से छुड़ाने वाले हनुमान का यश वेद गाते हैं । पाप और ताप रूपी अंधकार और शीत का नाश करने में आप निपुण हैं, और सेवक रूपी कमल को सुख देने के लिए आप बाल सूर्य के समान हैं । लोक परलोक में शोक-रहित करने वाले आप अपने भक्तों को स्वप्न में भी शोक नहीं होने देते । तुलसीदास को एक ही भरोसा है कि श्रीराम के प्रिय दास, शिव के अंश, केशरी के पुत्र का नाम कलियुग में कामतरु है, इच्छानुसार फल देने वाला है ।

[६]

दानव - दल क दलन बल
विदित भुवन हनुमाने ।
बंदी देव क बंधन
मोचल, वेद प्रमाने ॥
पाप ताप तम टारि
पीड़ पाला गलाय कत ।
सेवक हृदय सरोज ओज भरि
भोर भानु मत ॥

तनि भरोस तुलसी क नित
सफल लोक परलोक करु ।
रामदूत प्रिय पवन-सुत
शिव स्वरूप कलि कामतरु ॥

(१६)

महाबलसीव महाभीम महाबानइत,
महावीर विदित बरायो रघुवीर को ॥
कुलिस कठोर तनु जोर परै रोर रन,
करुना - कलित मन धारमिक धीर को ॥
दुर्जन को काल सो कराल पाल सज्जन को,
सुमिरे हरनहार तुलसी की पीर को ॥
सीय सुखदायक दुलारो रघुनायक को,
सेवक सहायक हैं साहसी समीर को ॥

हनुमान बल की सीमा हैं, बड़े भयङ्कर हैं, बड़े वीरों के बाना
वाले हैं, श्रीराम के चुने हुए प्रसिद्ध महाबलवान योद्धा हैं ।
समर में जोर पड़ने पर वज्र जैसा कठोर शरीर खलबली मचा
देता है । धर्म में धीर हनुमान के हृदय में करुणा शोभित है ।
दुष्टोंके लिए वह काल से भी भयङ्कर हैं और सज्जनों का पालन
करने करने वाले हैं । सीता को सुख देने वाले, श्रीराम पवनपुत्र
हनुमान सेवकों के सहायक हैं ।

[१०]

महावली अति भीम भयानक

वीर

बहादुर ।

चुनि विछि अपनाओल अपनहि

रघुवर जनि रनधुर ॥

बज्र शरीर, गर्जनहि रिपु रन

घोल

मचावथि ।

पुनि करुणाकर धर्मशील

उर

धीरज

लावथि ॥

खल हित काल कराल कटु

सुजन क कोमल पालके ।

सिय हित, प्रभुप्रिय, भक्तरत

सुमिरी. पवन क बालके ॥

(२१)

रचिबे को बिधि जैसे पालिबे को हरि हर,
 मीच मारिबे को ज्यायबे को सुधापान भो ॥
 धारिबे को धरनि तरनि तम दलिबे को,
 सोखिबे कृसानु पोषिबे को हिमभानु भो ॥
 दल दुख दोषिबे को जन परितोषिबे को,
 माँगिबो मलीनता को मोदक सुदान भो ॥
 आरत की आरति निवारिबे को तिहूँ पुर,
 तुलसी को साहिब हठीलो हनुमान भो ॥

हनुमान रचना करने में ब्रह्मा के समान, भक्तों का पालन करने के लिए विष्णु और शिव जैसे, मारने के लिए मृत्यु के समान, जिलाने के लिए अमृत जैसे हैं। आप पृथ्वी के समान भार धारण में समर्थ हैं, अंधकार का नाश करने को सूर्य के समान, सुखाने में अग्नि जैसे और पालने में चन्द्रमा के समान हैं। दुष्टों को दोष लगाने में वे दुःखरूप हैं और भक्तों को सन्तोष देने वाले हैं, तुच्छ वस्तु माँगने वाले को लड्डू खिलाने वाले हैं। दुःखियों का दुःख दूर करने को तुलसीदास के स्वामी ददप्रतिज्ञ हनुमान तीनों पुरों में बस अकेले हैं।

[११]

रचना हेतु विधाता,
पालन हित हरि रूपे ।
संहारक शिव, जीवन हित
अहं अमृत क रूपे ॥
शोषक अनल प्रमान,
चान रस पोषक शीतल ।
तिमिर - निकर केर भानु,
धारिणी धरिणी भूतल ॥

खल दूषक जन तोषके
याचक पारस मनि विदित ।
आरत जन ज्ञानक हठी
श्रीहनुमान महान हित ॥

(२३)

(१२)

सेवक सेवकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपामि नवै नाथ नाक को ॥
देवी देव दानव दयावने ह्वे जोरै हाथ,
बापुरे बराक और राजा राना राँक को ॥
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,
ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँक को ॥
सब दिन रुरो परै पूरो जहाँ तहाँ ताहि,
जाको है भरोसो हिय हाँक हनुमान को ॥

अपने सेवक हनुमान की सेवकाई जान श्रीराम उनके कृतज्ञ हैं, शिव सदा उनके अनुकूल रहते हैं और इन्द्र माथा नवाया करते हैं। देवी, देवता, दानव उनको प्रणाम किया करते हैं, फिर बेचारे दरिद्र राजा, राणा और रंक की कौन कहे। हनुमान के सेवक का जागते, सोते, उठते, बैठते मंगल ही होता है। जिसके हृदय में हनुमान की हाँक का भरोसा है उनको सदा सभी जगह सब कुछ पूरा ही पड़ता है।

(२४)

[१२]

सेव्यहु सँ सेवक हनुमान क

सेवा

प्रियतर ।

जानथि

जानकिनाथ,

शंकरहु मानथि सुखकर ॥

सुरपति भुक्तथि, देव - देवी

दानव

दयनीये ।

कर जोड़थि, पुनि नर नरपति

कत

की

कथनीये ॥

सुतल रितल बैसल उठल

मारुति - सेवक निर्भये ।

बल भरोस धुनि हुनि जनिक

से जन नितप्रति सुखमये ॥

(२५)

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
 लोकपाल सकल लखन राम जानकी ॥
 लोक परलोक को बिसोक सो बिलोक ताहि,
 तुलसी तमाहि कहि कहाँ बीर आन की ॥
 केसरीकिसोर बन्दीछोर के निवाजे सब,
 कीरति विमल कपि करुनानिधान की ॥
 बालक ज्यों पालिहैं कृभालु मुनि सिद्ध ताकी,
 जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की ॥

हनुमान के सेवकों पर शिव पार्वती, लोकपाल, लक्ष्मण,
 राम जानकी सभी अनुकूल रहते हैं, उसे लोक परलोक में कहीं
 भी शोक नहीं होता। हे तुलसीदास, अन्य बीर या देवी देवता
 उसपर क्रोध कर उसका क्या कर सकते हैं ? सभी तो केशरी-
 किशोर हनुमान की शरण में हैं और कैद से उन्हीं के छुड़ाए
 हुए हैं। जिसे करुणा के सागर हनुमान की हाँक का बल है
 उसका दयालु सिद्ध मुनि भी बच्चों की तरह पालते हैं।

[१३]

केसरी क नन्दन क हाक बल

जनि मन हुलसित ।

तनिक उपर परिवार सहित

शिव गौरी प्रमुदित ॥

सकल लोक लोकप,

प्रसन्न श्रीराम जानकी ।

उभय लोक गतशोक, तनिक

पुनि चाह आन की ?

जत जे छथि दिवि देवता

ममता वत्सलता उमड़ि ।

हनुमान क सेवक उपर

बरिसथि करुणा घन घुमड़ि ॥

(२७)

[१४]

कदनानिधान बलबुद्धि के निधान मोद,
महिमानिधान गुणज्ञान के निधान हो ॥
बामदेवरूप भूपराम के स्नेही नाम,
लेल देत अर्थ धर्म काम निरवान हो ॥
आपने प्रभाव सीतानाथ के सुभाव सील,
लोक बेद विधि के बिधुष हनुमान हो ॥
मन की वचन की करम की तिहुँ प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहिब सुजान हो ॥

हनुमान दया के स्थान हैं, बल बुद्धि और प्रताप के भंडार हैं, गुणज्ञान के धाम हैं, शिव के रूप हैं, राजाराम के स्नेही हैं, नाम लेने पर अर्थ धर्म काम मोक्ष देनेवाले हैं, अपने प्रभाव से और श्रीराम के शील-स्वभाव से लौकिक और वैदिक विधियों के पंडित हैं। हे हनुमान, मन, वचन, कर्म तीनों प्रकार से तुलसीदास तुम्हारा है और तुम तुलसीदास के चतुर स्वामी हो।

(२८)

[१४]

करुणा वरुणालय, बल-

बुद्धि क अक्षय धामे ।

महिमा गुण गरिमा निधान

निधि सिद्धि ललामे ॥

राम सिनेह सदेह रुद्र-

अवतार प्रमाने ।

जापक केँ दी धर्म - अर्थ-

कामहु निवाने ॥

निज प्रभाव संभाविते

सीतापति कर आन के ?

तन मन वचनहु छी शरण,

अगति क गति छथि आन के ?

(२६)

मन को अगम तन सुगम किये कपीस,
काज महाराज के समाज साज साजे हैं ॥
देव बन्दीछोर रनरोर केसरी किसोर,
जुग-जुग जग तेरे विरद बिराजे हैं ॥
बीर बरजोर घटि जोर तुलसी की ओर,
सुनि सकुचाने साधु खलगन गाजे हैं ॥
बिगरी सँवार अञ्जनीकुमार कीजे मोहि,
जैसे होत आये हनुमान के निबाजे हैं ॥

जिस काम का विचार मन में भी नहीं आता था उसे आपने सुगम कर दिया। महाराज रामचन्द्र के समाज साज को सज दिया। हे केशरीकिशोर हनुमान, आप देवताओं को कारागार से मुक्ति दिलाने वाले और युद्ध में खलबली मचाने वाले वीर हैं, आपका यश युग युग से संसार में विराज रहा है। ऐसे शक्तिशाली वीर का बल तुलसीदास की बार घट गया, यह सुनकर साधु दुःखी हैं और दुष्ट लोग प्रसन्न। हे अञ्जनीकुमार, मेरी बिगड़ी सुधारकर आप वैसा ही कीजिए जैसा हनुमान के भक्तों के होता आया है।

मनहुँ न सकइ कह जाय, ततय

गति अहँक अमन्दे ।

रघुराज क सब काज

पुराओल गुरु लघु छन्दे ॥

देवहु केँ उबारि, दानव-

रन रोर मचाओल ।

युग - युग धरि यश विरुद

तुलसिहि क बेर घटाओल ॥

सुनि सकुचथि से सुजन, पुनि

दुर्जन गज्जथि चित हुलसि ।

बिगड़ल बात सम्हारि प्रभु,

टेक विभूति क गहु तुलसि ॥

[१६]

सुजान शिरोमनि हौ हनुमान,
सदा जन के मन बास तिहारो ॥
ढारो बिगारो मैं काको कहा,
केहि कारन खीझत हौ तो तिहारो ॥
साहिब सेवक नाते ते हौ तो,
कियो तो तहाँ तुलसी को न चारो ॥
दोष सुनायेते आगेहुँ को,
हुसियार है हो मन तौ हिय हारो ॥

हे हनुमान, तुम ज्ञानियों के शिरोमणि हो और अपने सेवकों के मन में तुम्हारा सदा वास है। मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है? किस कारण मुझसे खीझते तो? आखिर हूँ तो मैं तुम्हारा ही। यदि आप स्वामी-सेवक सम्बन्ध का त्याग करेंगे तो तुलसीदास बेचारा कहाँ जायगा? मैं मन में हिम्मत हार गया हूँ फिर भी अपना दोष सुनकर आगे के लिए सावधान हो जाऊँगा।

(३२)

[१६]

ज्ञानि-शिरोमणि ! मारुति ! अहँ

जन मानस वासी ।

ककर कतय की हरल-बिगाड़ल,

रहु न उदासी ॥

नाथ ! हाथ मे अहँक दास

पुनि बिसरि न जयवे ।

दोष सुभ्रितहुँ सम्हरवा क

अवसर न दुरयवे ॥

सैन्य अहाँ, सेवक हमहुँ

ई चिरभाव निबन्ध जे ।

हिय हारल रहितहुँ, अहिँक

अवलम्बन अनुबन्ध से ॥

(३३)

तेरे थपै उथपै न महेस,
थपै थिर को कपि जे घर घाले ॥
तेरे निवाजे गरीबनिवाज,
विराजत बैरिन के उर साले ॥
संकट सोच सबै तुलसी,
लिए नाम फटै मकरो के से जाले ॥
बूढ़ भये बलि मेरिहि बार,
की हारि प्रे बहुतै नत पाले ॥

हे हनुमान, तुम्हारे बसाये हुए को शिव भी नहीं उजाड़ सकते, फिर तुम्हारे उजारे हुए घर को अच्छी तरह कौन बसा सकता है ? हे गरीबनिवाज, तुम्हारी रक्षा किए हुए विराज रहे हैं, जो शत्रुओं के हृदय में चुभ रहा है । तुलसीदास कहते हैं कि हनुमान का नाम लेने से सारे दुःख और सोच मकड़ी के जाले के सामान नष्ट हो जाते हैं । मेरी ही बार क्या तुम बूढ़े हो गये या बहुत सारे भक्तों का पालन करते करते थक गये हो ?

[१७]

दी बसाय जनिका, तनिका

हरहु न उपटावथि ।

जँ उजाड़ि दी तँ पुनि

तकरा के अटकावथि ?

दी उचारि जकरा से

रिपु - उर शल्य दुरन्ते ।

नाम उचारि करथि जन

चिन्ता - जाल क अन्ते ॥

हमरहि बेर अहाँ कौना

बुढ़ा गेलहुँ, अगुता गेलहुँ ?

आरत जन पालन नियम

करइत की अकछा गेलहुँ ?

(३५)

[१८]

सिंधु तरे बड़े वीर दले खल
जारे हैं लङ्का से बङ्कमवासे ।
तैं रनकेहरि के बदले मतले,
अरि - कुञ्जर छैल छवासे ॥
तो सों समत्थ सुसाहिव सेइ,
सहै तुलसी दुख - दोष दवासे ॥
बानर - बाज बड़े खल खेचर,
लीजत क्यों न लपेटि लवा से ॥

तुमने समुद्र पार किया, बड़े बड़े वीर राक्षसों को मार डाला और लंका जैसी कठिन नगरी को जला डाला । रण में सिंह के समान तुमने शत्रुरूपी हाथी के बच्चों को रौंद डाला । तुम से समर्थ स्वामी की सेवा करते हुए भी तुलसीदास असह्य दुःख और दोष सह रहा है ! हे बानर-बाज, दुर्जन रूपी पत्नी बढ़ गये हैं, तुम उन्हें वैसे ही क्यों नहीं लपेट लेते जैसे बाज लवा पक्षी को पकड़ लेता है ?

(३६)

[१८]

सागर पार कयल, कत भटके

पटकि

पछाड़ल ।

जारल लंक क वंक दुर्ग,

अरि दल संहारल ॥

रणकेशरी कपीश ! शत्रु-

गज पीतक मातल ।

करइत छल उत्पात पातकी,

छनहि

निपातल ॥

एहन स्वामि-पद गहि तुलसि

दुख दोषेँ सीदित सुमन ।

कबिवर ! खल रुज खग कुचर

भूपटिअ भट अहँ बाज वन ॥

(३७)

अच्छ - विमर्दन कानन - भान,
 दसानन, - आनन भा न निहारे ॥
 वारिदनाद अकम्पन कुम्भकरत्र,
 से कुञ्जर केहरि - बारो ॥
 राम - प्रताप हुतासन कच्छ,
 विपक्ष समीर समीर - दुलारो ॥
 पाप तें साप तें ताप तिहूं तें,
 सदा तुलसी कहैं सो रखवारो ॥

हे अक्षय कुमार को मारनेवाले और वाटिका उजाड़ने वाले
 वीर, तुमने रावण के मुखतेज की ओर देखा भी नहीं। मेघनाद,
 अकम्पन और कुम्भकर्ण रूपी हाथियों को मारने में आप तरुण
 सिंह के समान हुए। हे पवन के दुलारे पुत्र, श्रीराम के प्रताप-
 रूपी अग्नि से विपक्षी के नगर को जलाने में आप पवनरूप हुए
 शाप और तीनों प्रकार के ताप से आपही सदा तुलसी की रक्षा
 करने वाले हैं।

[१६]

हनल अच्छ परतच्छ,

दशानन केँ न गुदानल ।

कुंभकर्ण घननाद अकंपन

कुंजर

हानल ॥

हे केशरीकिशोर ! पवन-नन्दन

बनि

पवने ।

राम - प्रतापानल पजारि

करु अरिदल दहने ॥

हे अंजनिनन्दन ! विदित

सेवक - रक्षण ब्रत अपन ।

पाप ताप अभिशाप सँ

लिअ उबारि तुलसी सुमन ॥

(३६)

जानत जहान हनुमान को निवाज्यो जन,
मन अनुमानि बलि बोल न बिसारिये ।
सेवा-जोग तुलसी कबहूँ कहाँ चूक परी,
साहेब सुभाय कपि साहेबी सँभारिये ॥
अपराधी जानि कीजै साँसति सहस भाति,
मोदक मरै जो ताहि माहुर न मारिये ।
साहसी समीर के दुलारे रघुबीर जू के,
बाँह पीर महावीर बेगही निबारिये ॥

यह संसार जानता है कि तुलसीदास हनुमान का सेवक हैं । हे हनुमान, मैं बलि जाता हूँ, विचार करके अपने वचन को न भूलिए । तुलसीदास तो आपकी सेवा के योग्य कभी था ही नहीं । न जाने कहाँ भूल हुई । हे हनुमान, आप अपने स्वामीबाले स्वभाव के अनुसार अपने स्वामीपन को सँभालिए । यदि मुझे दोषी पाइये तो अनेक तरह से दंड दीजिए परन्तु जो लड्डू देने से ही मरे उसे विष क्यों दें ? आप महावीर साहसी पवन के पुत्र हैं, श्रीराम के दुलारे हैं, मेरी बाँह की पीड़ा को शीघ्र ही दूर कीजिए ।

[२०]

जम जाहिर जे हनुमान क
ई सेवक साबिक ।
हुजुर ! उजुर ई बुझि-सुझि
करब फैसला दाबि क ॥
अछि अयोग्य सेवक तुलसी
शासति पुनि उचिते ।
किन्तु मोदकहिँ मरय, न
तकरा माहुर पचते ॥

विसरिअ विरुद न अपन ई
छी अहँ सेवकहित निरत ।
महावीर प्रभु ! भुज रुजा
मेटिअ भट, आवहुँ विकट ॥

(४१)

[२१]

बालक विलोकि बलि वारें ते आपनो कियो,
 दीनबन्धु दया कीन्हों निरुपाधि न्यारिये ।
 रावरो भरोसो तुलसी के राबरोई बल,
 आस राबरीयै दास रावरो बिचारिवे ॥
 बड़ी बिकराल कलि काकोन बिहाल कियो,
 माथे पगु बली को निहारि सो निवारिये ।
 केशरीकिसोर रन - रोर बरजोर बीर,
 बाहुपीर राहुमातु ज्यों पछारि मारिये ॥

हे दीनबन्धु, बलि जाता हूँ, बालक देखकर आपने लड़कपन से ही अपना लिया । आपने मुझ पर अनोखी, निमल दया की । तुलसीदास को आपही का भरोसा, आपही का बल है और आपकी ही आशा है । आपहीं का दास हूँ, इस पर विचार कीजिए । कलिकाल बड़ा ही भयङ्कर है, ऐसा कौन है जिसे इसने व्याकुल नहीं किया ? बलिहारी है आपकी, देखिये यह बलवान मेरे माथे पर अपना पैर रख रहा है, अब तो इसे रोकिये । हे केशरीकिशोर हनुमान, आप युद्धस्थल में खलबली मचाने वाले बीर हैं । जैसे आपने राहुमाता का वध किया, वैसे ही बाँह की पीड़ा दूर कीजिए ।

(४२)

[२१]

दीनबन्धु ! शिशु दीन देखि

सहजहिँ अपनाओल ।

दया अहेतुक अहँक निरखि

पद गहि गोहराओल ॥

अहिँक आस - विश्वास,

अहिँक बल बोल-भरोसो ।

दास खास अछि अहिँक

रहओ वरु मूढ़ सदोषो ॥

कलि कराल कटु कोप कय

करइत कंपित सिर चढ़ल ।

यदनु सिंहिका संहरल,

हरिअ हमर पीडा प्रबल ॥

(४३)

उथपे थपन थि।थपे उथपनहार,
 केसरी कुमार बल आपनो सँभारिये ।
 राम गुलामनि को कामतरु रामदूत,
 मोने दीन दूबरे को तकिया तिहारिये ॥
 साहिब समर्थ तोसो तुलसी के साथे पर,
 सोऊ अपराध बिनु वीर बाँधि मारिये ।
 पोखरी बिसाल बाहु बलि बारिचर पीर,
 मकरी ज्यों प्रकरि कै बदन बिदारिये ॥

उजड़े को अच्छी तरह बसाने वाले और बसे हुए को उजाड़ने वाले हे केशरीकुमार हनुमान, अपना बल सँभालिए । हे श्रीराम के दूत, आप रामभक्तों के लिए कामतरु हैं, मुझसे दीन दुर्बल को आपका ही सहारा है । आपसा समर्थ स्वामी मेरी रक्षा करने वाला है फिर भी बिना अपराध ही बाँध कर मारा जाता हूँ । इस बाहुरूपी विशाल पोखरी में यह पीड़ारूपी जल-जन्तु है, जैसे आपन मगर का मुँह फाड़ मार डाला वैसे ही इस पीड़ा का नाश कीजिए ।

[२२]

उजड़ल के दी बास,
उजाड़ी बहसल बसलो ।
हे केसरी किशोर ! सम्हरि
बल देखविअ अपलो ॥
राम गुलाम क काम कल्पतरु
राम - दूत ! अहूँ ।
तव पद माथ चढ़ाय नाथ,
पड़ तुलसि विपद कहूँ ?

बाहु विशाल तड़ाग ई
पीडा जलचर संचरय ।
हरु हमरहु दुख - दोष पुनि
मुख मकड़ी क विदारि कय ॥

राम को सनेह राम साहस लखन सिय,
 राम को भगति सोच संकट निवारिये ।
 मुद - मरकट रोग - बारिनिधि हेरि हारे,
 जीव जामवन्त को भरोसो तेरो भारिये ॥
 कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम पन्वड़ तें,
 सुथल सुवेल भाल बैठि कै विचारिये ।
 महावीर बाँकुरे बराकी बाहुबीर क्यों न,
 लंकिनी ज्यों लातघात ही मरोरि मारिये ॥

हे हनुमान, मेरा रामप्रेम, मेरा साहस, राम लक्ष्मण सीता
 में मेरी भक्ति, इन सब पर विचार कर मेरे संकट को दूर कीजिये ।
 मेरे रोग रूपी विशाल सागर को देख कर आनन्द रूपी वानर
 हिम्मत हार गए हैं, पर जीव रूपी जामवन्त को तुम्हारा ही
 भारी भरोसा है । हे कृपालु हनुमान, अब तुलसीदास के प्रेम
 रूपी पर्वत पर से कूदिये, सुवेल पर्वत पर बैठ कर जामवन्त
 चिन्ता कर रहे हैं । हे बाँके महावीर, जैसे आपने एक लात ही
 में लंकिनी को मार डाला था वैसे ही इस तुच्छ बाहुपीड़ा को
 मरोड़ कर मार डालिए ।

[२३]

हिय बिच गम सिनेह रूप,

लछुमन साहस पुनि ।

भक्ति मैथिली, तखन कष्ट

जे किछु हुनकहि गुनि ॥

रोग सिन्धु लखि मुद मर्कट

दल हारल होसे ।

जीव जांववंतहु क अहिँक

अछि एक भरोसे ॥

प्रेम - पर्वत क उपर चढ़ि

कूदि सुबेल क शिखर प्रति ।

भुज-रुज लंकिनि केँ दुरिअ

महावीर ! पद घात हलि ॥

(४७)

[२४]

लोक परलोभहुँ तिलोक न बिलोकियत
 तो सो समर्थ चष चारिहुँ निहारिये ।
 कर्म काल लोकपाल अग जग जीव जाल,
 नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये ॥
 खास दास रावरो निवास तेरो तासु उर,
 तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये ।
 बात तहमूल बाहुसूल कपि कच्छु बेलि,
 उपजी सकेलि कपि खेल ही उखारिये ॥

मैं चारों ओर देखता हूँ लेकिन तीनों लोक, लोक परलोक और तीनों काल में मुझ जैसा समर्थ कहीं नहीं दिखाई देता । कर्म, काल, लोकपाल, चल, अचर, जीवजाल सभी आपही के हाथ में हैं । आप अपनी महिमा का विचार कीजिए । हे देव, अपने विशेष सेवक—जिसके हृदय में आपका वास स्थान है,—तुलसीदास का यह भारी दुःख आपसे कैसे देखा जाता है ? बाँहुरूपी वृत्त की जड़ में बाहुपीड़ारूपी यह जो लता उपजी है, हे हनुमान, इसे खेल ही खेल में उखाड़ डालिए ।

(४८)

[२४]

चहुदिस चख देखल, कहँ
भुवन न अहँक समाने ।
समरथ, जनि आदेश
काल दिक्पालहु मानै ॥
अग जग जत जे जीवजन्तु
सभ अहँक अधीने ।
महिमा अपन विचारि करिअ
जे उचित प्रवीने ॥

खास दास तुलसी क उर
बसितहुँ, भुज रुज उपजले ।
कपि ! उपाड़ु कविकच्छु तरु
गरु रोग क जड़ि जमल जे ॥

(४६)

करम कराल कंस भूमिपाल के भरोसे,
बकी बक भगिनी काहु तें कहा डरेगी ।
बड़ी बिकराल बाल घातिनी न जात कहि,
बाहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी ॥
आइ है बनाइ वेष तू विचारि देख,
पाप जाय सबको गुनी के पाले परैगी ।
पूतना पिसाचिनी ज्यों कपि कान्ह तुलसी की,
बाहुपीर महावीर तेरे मारे मरैगी ॥

भयङ्कर कर्म रूपी कंस राजा के बल पर, रोगरूपी बकासुर
की बहन किसी से क्यों डरेगी ? इस महाभङ्ग, बालकों को
खाने वाली की दुष्टता कही नहीं जाती यह मेरे बाहुबल रूपी
छोटे-छोटे सुन्दर बालकों को छलेगी । हे हनुमान, आप ही
विचार देखें, वह कैसा वेष धर कर आई है, जब यह आप गुणी
के पाले पड़ेगी तभी जबका यह दुःख दूर होगा । जैसे श्रीकृष्ण
ने पिशाचिनी पूतना का वध किया, हे महाबलवान, यह तुलसी-
दास की बाहुपीर तेरे ही हाथ से मरेगी ।

[२५]

कलि कुचालि कंसक भरोस सँ

भरि उर साहस ।

वकी पूतना डरय टरय नहि,

उर भरि बिष - रस ॥

प्राण घातिनी विकट कलेवर

शिशु भरि अँके ।

आयल गुप्तचुप रूप बना

गुन गोपि अचंके ॥

हनलन्हि कृष्ण सतृष्ण पिबि

दूध सूध प्रानेँ पनेँ ।

बाहु वेदना पूतना

पवनपूत हनता भने ॥

(५१)

भाल कि काल की कि गोप की त्रिदोष की है,
 वेदन विषम पापताप छलछाँह की ।
 करमन कूट की कि जंत्र - मंत्र बूट की,
 पराहि जाहि पापिनी मलीन मन माँह की ॥
 पैहहि सजाय न तु कहत बजाय तोहि,
 बावरी न होहि बानि जानि कपि नाह की ।
 आन हनुमान की दोहाई बलवान की,
 सपथ महावीर की जो रहै पीर बाँह की ॥

पता नहीं यह विषम वेदना कर्म की रेखा से, काल से, क्रोध से, त्रिदोष से या दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों प्रकार के ताप के पाप से है, या कपट की छाँह से, मारण आदि प्रयोग के बल से, या यन्त्र मंत्ररूपी वृत्त का फल है, जो भी हो, हे पापिनी, तू मन की मलिनता है, भाग जा नहीं तो सजा पायगी । डंके की बाँट से मैं कहता हूँ, हनुमान का स्वभाव जानते हुए पागलपन न कर । हनुमान की आन, बलवान की दुहाई है, महावीर की सपथ है, जो बाहुपीर रह जाय ।

[२६]

की काल क, की भाल क दोषें

कि - वा त्रिदोषें ।

कोनहु पाप तापें, कृत कर्म

विपाक क रोषें ॥

यंत्र मंत्र कलि कपट कूट

बूटी विष योगें ।

प्रबल भेल भुजमूल शूल

हटि जाह नियोगें ॥

नहि तैं हनुमान क शपथ

आन मान हुनि बल प्रबल ।

पीड़ा कीड़ा रोग दुख

छनहि छपित होयबह निरल ॥

(५३)

सिंहिका सँहारि बलि सुरसा सुधारि छल,
लंकिनी पछारि मारि वाटिका उजारी है-
लङ्का परजारि मकरी बिदारी बार बार,
जातुधान धारि धूरि धानी करि डारी है ॥
तोरि जमकातरी मन्दोदरी-कटोरि आनी,
रावन की रानी मेघनाद - महतारी है ।
भीर बाँह पीर की निपट राखी महावीर,
कौन के संकोच तुलसी के सोच भारी है ॥

मैं बलि जाता हूँ, आपने ही सिंहिका को मारा, सुरसा को छल द्वारा सुधारा, लङ्किनी को पछाड़ मारा और अशोक वन को उजाड़ डाला, राक्षसी सेना को बार बार गर्द की ढेर बना डाला । रावण के महल के फाटक को तोड़ आप उस मन्दोदरी को बाहर खींच लाए, जो रावण की रानी और मेघनाद जैसे वीर की माता थी । हे महावीर, बाहुपीड़ा के इस भारी सोच को किस के संकोच से जब तक छोड़ रक्खा है, तुलसीदास को इसी का सोच है ।

[२७]

संहारल सिद्धिका, नीति मत

सुरसा साधल ।

लंकिनि हनल निशंक, मर्कारका

उदर विदारल ॥

वन वाटिका उजाड़ि पजारल

लंक कनक - पुरि ।

मातुधान दल सानि धूलि

रावन बल मद दुरि ॥

हति हिसक धमिटल सहटि

मन्दोदरि पति सुत समुख ।

तुलसिक भुज रुज नाश हित

किण्णें संकुचित चित विरुख ॥

(५५)

तेरी बालकेलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूतल शरीर - सुधि सक रवि राहु को ।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरति न काहु की ॥
साम दान भेद विधि वेदहु लवेद सिद्धि,
हाथ कपिनाथही के चोटी चोर साहु की ।
आलस अनख परिहास की सिखावन हैं,
एते दिन रही पीर तुलसी के बाहु की ॥

हे बीरपुरुष, तेरे लड़कपन के खेल को सुनकर धीर भी सहम जाते हैं तथा इन्द्र, सूर्य, राहु तक को अपने शरीर की सुधि नहीं रहती । तेरे बल से सारे लोकपाल शोकरहित रहते हैं, तेरे नाम लेने से किसी का दुःख नहीं रहता । साम, दान, भेद की विधियाँ वेद और लवेद की सिद्धियाँ सब आप ही के हाथ में हैं । साहू-कार और चोर दोनों ही की लगाम आपही के हाथ है । क्या आलस, या क्रोध, या कि परिहास या कि शिक्षा देने को इतने दिन तक आपने तुलसीदास के बाँह की पीड़ा रहने दी ?

[२८]

अहँक बाल क्रीडा अद्भुत

गुनि सहमथि धीरो ।

इन्द्र चन्द्र रवि साहु मंद

ग्रह विसरु शरीरो ॥

अहँक बाहु दिक्पाल वसथि

आरत - हर नामे ।

साम दाम विधि भेदहु,

बेदहु कह, अहँ धामे ॥

चौर - साधु सत - असत जत

अहिँक हाथ चोटी सभक ।

अलस रोष परिहास वा

तुलसिक भुज रुज सिख-सबक ॥

(५७)

दूकनि घर घर डोलत कंगाल बालि,
 बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि प्रीति हैं ।
 कीन्ही है सँभार सार अंजनी कुमार वीर,
 आपनी बिसारि है न मेरे हूँ भरीसो है ॥
 एतनो परेखी सब भाँति समरथ आजु,
 कपिनाथ साँची कहौ को त्रिलोक तोसो है ।
 साँसति सहत दास कीजै पेपि परिहास,
 चीरी को मरन खेल बालकनि को सो है ॥

दुकड़ों का मुहताज मैं घर घर घूमता फिरता था । आपने मुझे वैसे ही पाला जैसे अपने बच्चे पाले जाते हैं । वीर अंजनी के बेटे ने मेरी देख-भाल की । और आज आप मुझे भूल बैठेंगे इसकी मुझे उम्मीद नहीं है । आज मैंने सब समर्थों को अच्छी तरह परख लिया, पर हे कपिनाथ, मैं सच कहता हूँ, तीनों लोक में आपके समान लायक कोई नहीं है । सेवक का दुःख देखकर भी आप हँसी कर रहे हैं, यह तो वही हुआ कि “चिड़िए की जान जाय, बच्चों का खेल” !

[२६]

अन-कन हित घर घर घुमि

कत दुतकार सहेजल ।

पुनि तकरहु बुझि बाल

दया लव पानि अडेजल ॥

अंजननन्दन ! कोना तखन

पुनि विसरि रगेदी ।

वा कुतूहलेँ जाँच फेर मे

देल विनोदी ॥

किन्तु कपीश्वर कौतुकी !

कहबी चलित कहंत जे ।

नेना भुटका खेड़ि जे

चढ़ै - चुनमुनि क अंत से ॥

(५६)

[३०]

अपने ही पाप तें त्रिताप तें कि साप तें,
बढ़ी है बाहुवेदन कही न सहि जाति है ।
औषध अनेक जंत्र - मंत्र टोटकादि किये,
बादि भए देवता मनाए अधिकाति हैं ॥
करतार भरतार हरतार कर्म काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है ।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरी कह्यो रामदूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीर तें पिराति है ॥

अपने ही पाप से या तीनों ताप से, या किन्हीं देवी देव-
ताओं के शाप से बाँह की वेदना ऐसी बढ़ी है कि न तो कही
जाती है, न सहो जाती है । अनेक औषधि, यंत्र, मंत्र, टोटका
आदि प्रयोग किये पर सब व्यर्थ हुए । देवताओं के मनाने से
पीड़ा बढ़ती ही जाती है । ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कर्म, काल,
संसार के इस जाल में कौन ऐसा है जो तुम्हारी आज्ञा का पालन
न करता हो ? तुलसी तुम्हारा ही गुलाम है । हे रामदूत, तूने
भी कहा कि तू मेरा है । हे वीर ! तेरी ढील ई मुझे इस पीड़ा से
भी अधिक पीड़ित कर रही है ।

(६०)

[३०]

प्राप त्रिताप विपम अभिशाप

कोनहु निज दोषें ।

बढ़ल वेदना बाहु असह

विधि दैव के दोषें ॥

औषध यंत्र मंत्र टोटम

सभ व्यर्थ बुझाइछ ।

जत जत जतन कयल तत तत

दुख बढ़ले जाइछ ॥

काल कर्म विधि हरि हरहु

अहँक निदेश न टारि सक ।

रामदूत ! अनठाउ जुनि

अहिक दास तुलसी असक ॥

(३१)

दूत रामराय को समूत पूत वाय को,
समर्थ हाथ पाय को सहाय असहाय को ।
बाँकी बिरुदावली विदित वेद गाइयत,
रावन सो भट भयो मूठिका के घाय को ॥
एते बड़े साहेब समर्थ को निवाज आजु,
सीदत सुसेवक बचन मन काय को ।
थोरि बाहुपीर की बड़ी गलानि तुलसी को,
कौन पाप कोप लोप प्रगट प्रभाय को ॥

तुम राजा राम के दूत हो, वायुदेव के सुपुत्र हो, हाथ पैर के समर्थ, बलवान हो, असहायों के सहायक हो । तुम्हारी सुन्दर कीर्ति लोकविख्यात है और वेद गाते हैं । रावण जैसा वीर बस तुम्हारे एक चोट भर को हुआ, लगते ही मूर्च्छित हो गया । इतने बड़े शक्तिशाली स्वामी को पाकर भी आज मन-बचन-कर्म से योग्य यह सेवक तुलसीदास दुःख पा रहा है । तुलसीदास कहते हैं कि मुझे बाहुपीर की तो थोड़ी ही गलानि है, अधिक सोच इस बात का है कि न जाने किस पाप पर आपने क्रोध किया है, जिससे आपके प्रकट प्रभाव का लोप हो गया हो ।

[३१]

रामरूत पवन क सपूत

कर - चरण अमित बल ।

संहारल मुष्टि क प्रहार

अगणित रावण दल ॥

वेद विदित विरुदावलि

प्रभुता विभुता देव क ।

तन मन वैन न चैन

विकल विह्वल तव सेवक ॥

प्रभुक महत्ता निकट की

रोग शोक लघुता ललक ।

भुज रुज पाप गलानि कत

हरु कृपालु करुणा पलक ॥

(६३)

[३२]

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हो !
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम,
रामदूत की रजाइ साथे मानि लेत हैं ।
चोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुजोग रोग,
हनुमान आन सुनि छाँड़त निकेत हैं ।
क्रोध कीजै कर्म को प्रबोध कीजै तुलसी को,
सोध कीजै तिनको जो दोष दुख देत हैं ।

देवी, देवता, दानव, मनुष्य, मुनि, सिद्ध, नाग, छोट, बड़े
जितने भी जड़ चेतन जीव संसार में हैं, पूतना, पिशाचिनी,
कुटिल राक्षस सब श्रीरामदूत हनुमान की आज्ञा सिर चढ़ाते हैं ।
विकट मंत्र, मारण, छल, बुरे प्रयोग, रोग, सब हनुमान का आना
सुनकर घर छोड़ भागते हैं । हे हनुमान, कर्म पर क्रोध कीजिए
और तुलसीदास का प्रबोध कीजिए । उन दोषों को दूर कीजिए
जो दुःख देते हैं ।

(६४)

[३२]

ऋषि मुनि देव पितर छथि जे जत

सिद्ध साध्य जन ।

यक्ष नाग गन्धर्व असुर सुर

भूत प्रेत जन ॥

आज्ञा लेथि चढ़ाय माथ

रघुवीर क दूत क ।

रोग शोक दुख दुरय

नाम सुनि पवन क पूतक ॥

कर्म दोष पर रोष कय

तोष होस तुलसी क दय ।

सोधिये जे दुख दय रहल

हे कपीश करुणानिलय ॥

(६५)

(३३)

तेरे बल बानर जिताये रन रावन से,
तेरे घाले जातुधान भये घर घर के ।
तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,
सकल समाज साज साजै रघुवर के ॥
तेरे गुणगान सुनि गौरवान पुलकित,
सजल बिलोचन विरंचि हरि हर के ।
तुलसी के माथे पर हाथ फेरौ कीसनाथ,
देखिये न दास दुखी तो से कनिगर के ॥

हे हनुमान, तेरे ही बल ने वानरों को रावण के विरुद्ध जीत दिलाई । तेरे ही मारे राक्षस नष्ट हो गए । तेरे ही बल से राजा-राम ने देवताओं के कार्य किए । तूने श्रीराम के सारे समाज साज को सजा दिया । तेरा गुणगान सुन देवता हर्षित होते हैं, विष्णु और शिव के नेत्रों में आनन्द के आँसू भर जाते हैं । हे वानरों के स्वामी ! तुलसीदास के माथे पर अपना हाथ फेरो । तेरे जैसे मर्यादा के रक्षक को अपने सेवक का दुःख नहीं देखना चाहिये ।

(३६)

[३३]

अहिक पराक्रम बल
वानर दल जीतल लंका ।
राम कयल सुर काज
हनल रावन रन वंका ॥
साजल सकल समाज
राम - राज क रहि मूले ।
जय कपोश मर्यादा—
पालक ! जगत अतूले ॥

गावि अहंक गुन देव गन
पुलकित विधि हरि हर सुमन ।
माथ हाथ तुलसी क दय
मर्यादा राखिअ अपन ॥

(६७)

पालो तेरे दूक को परे हूँ चूक मूकिये न,
 कूर कौड़ी दू को हों आपनो ओर हेरिये ।
 भोरानाथ भोरे हौ सरोष होत थोरे दोष,
 पोषि तोषि थापि आपने न अवडेरिये ॥
 अंबु तू हों अंबुचर अंब तू हों डिंभ सो न,
 बूझिये विलंब अवलंब मेरे तेरिये ।
 बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
 तुलसी की बाँह पर लामी लूम फेरिये ॥

मैं आपके दुकड़ों से पला हूँ । मुझसे गलती हो गई हो तो भी मेरा त्याग न कीजिये । मैं दो कौड़ी का हूँ, किसी काम का नहीं, पर आप अपनी ओर देखिए, आप तो समर्थ हैं । आप भोलानाथ तो भोले हैं, थोड़ी सी गलती पर क्रोध करते हैं, पोस बाल कर और बसा कर मुझे निकाल बाहर न कीजिए । तुम जल हो, मैं जलजीव हूँ, तुम माता हो, मैं बच्चा, यह समझ देर न कीजिए, मुझे आपही का भरोसा है । बालक को विकल समझ कर रक्षा कीजिए, प्रेम पहचान कर तुलसी की बाँह पर अपनी लम्बी पूँछ फेरिए ।

[३४]

अहिक देल अन - कन सँ

पालित अधम शरीरे ।

चूक करिअ हम लुद्र

मोल कौड़ि क लघु कीड़े ॥

भोलानाथ ! अनाथ क किछु

दोषहु न रोषायव ।

चिर सेवक सम्बन्ध अपन

आश्रयहि बसायव ॥

मीन पानि, शिशु जननि बुझि

प्रेम परखि रुखि राखबे ।

अपन लंब लांगूल लय

विकल अंग सहलायबे ॥

(६६)

घेर लिये रोगनि कुलोगनि कुजोगनि ज्यों,
 बासर जलद घनघटा धुकि धाई है ।
 बरषत बारि पीर जारिये जवासे जस,
 रोष बिनु दोष धूम मूल मलिनाई है ॥
 करुणानिधान हनुमान महाबलवान,
 हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजें तैं उड़ाई है ।
 खायो हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि,
 केसरीकिसोर राखे बीर बरियाई है ॥

मुझे रोगों, बुरे लोगों और बुरे योगों ने वैसे ही घेर लिया है जैसे वर्षा ऋतु में किसी-किसी दिन घोर घटाएँ घेर लेती हैं, ये सब निरपराध मुझ पर क्रोध कर रहे हैं। पीड़ा रूपी जल की वर्षा हो रही है, मेरे यश के जवासे जल कर जड़ तक काले पड़ गए हैं, हे करुणानिधान महावीर, इसे देख कर हँस कर, हाँक लगा कर, फूँक कर, इस बादल सेना को उड़ा दीजिए। तुलसी दास को तो निर्दय राक्षसों ने कब खा लिया होता, वह तो आप केशरीकिशोर ने बल पूर्वक रक्षा की है।

[३५]

रोग-साप दुर्योग आवि
घेरल दुर्जन दल ।
दिन केँ जनि घन घटा
घेरि बरिसावय दुख जल ॥
जस जवास भुलसाय
ज्वलित बिनु दोष रोष मे ।
अवनपूत ! अहँ फूकि
उड़ाबिअ हँसी जोस मे ॥

दुष्ट रोग राकस जकड़ि
गिड़ि जैते सहजहिँ प्रबल ।
हे केसरी - किसोर ! यदि
अहँ न बरजितहुँ बेगि बल ॥

(७१)

रामगुलाम तुही हनुमान,
 गुसाईं गुसाईं सदा अनुकूलो ।
 पाल्यौ हौं बाल ज्यों आखर दू,
 पितु मातु ज्यों मंगलमोद समूलो ॥
 बाँहु की बेदन बाँहपगार,
 पुकारत आरत आनन्द भूलो ।
 श्रीरघुबीर निवारिये पीर,
 रहौं दरबार परो लटि लूलो ॥

जीवों के पालनेवाले हे श्रृष्ठ स्वामी, हे हनुमान, तुम श्रीराम के सेवकों के सदा अनुकूल हो। रामनाम के दो अक्षरों ने मुझे मातापिता की भाँति पाला है, जैसे आनन्द मंगल की जड़ को पालते हैं। हे दृढ बाहु वाले, बाँह की पीड़ा से दीन होकर सारा आनन्द भूल कर मैं तुम्हें पुकारता हूँ। मेरी पीड़ा को दूर करो, जिससे श्रीराम के दरबार में दुबला लूला होकर ही पड़ा रहूँ।

[३६]

जीव ज्योति इन्द्रिय वाणी—

स्वामी — गोस्वामी !

प्रभु महान हनुमान

राम - सेवक सहगामी ॥

राम नाम दुहु आखर

जनक-जननि पालित भल ।

महाबाहु ! गहि बाहु वेदना

हरिअ शूल मल ॥

रघुवर दर - दरबार गहि

पड़ल रहव मालिक क रुख ।

लटि - लुटि लूलो - नाडरो

दुकर-कुबर प्रभु निकट सुख ॥

(७३)

काल की करालता करम कठिनाई कीधौ,
पाप के प्रभाव की सुभाव बाय बावरे ।
वेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,
सोई बाँह गही जो गही समीर डाबरे ॥
लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन ओ तयो है तिहुँ तावरे ।
भूतनि की आपनी पराई है कृपानिधान,,
जानियत सबही की रीति राम रावरे ॥

कौन जाने काल की भयङ्करता है या कर्म की कठिनता, पाप का प्रभाव है या बावरे वायु के स्वभाव से ऐसा है, पर रात दिन ऐसा विकट दर्द हा रहा है कि सहा नहीं जाता । इस दर्द ने उसी बाँह को पकड़ा है जिसे हनुमान ने पकड़ा था । यह तुलसीदास रूपी वृक्ष आपका ही लगाया हुआ है और त्रिताप से तप तप कर मलिन हो रहा है । यह देख अपनी कृपा के जल से इसे सींचिए । पता नहीं भूत प्रेत की बाधा है या अपने ही पाप का फल है, पर हे कृपानिधान राम, आप तो सब की रीति जानते हैं, आप इस दूर कीजिए ।

[३७]

काल क कुटिल प्रभाव

स्व-कृत कर्महि क विपार्क ।

पाप क कटु परिपाक

सहज कफ - पित्त - प्रवाते ॥

एना वेदना व्यथा राति दिन

सहल न जाइछ ।

षवनपूतहि क गहल बाँहि

किछु कहल न जाइछ ॥

रोपल तुलसी, ताप त्रय

भुलसि रहल, करुणानिधे !

कृपा-विन्दु सिञ्चित करिअ

अन्तर्यामी ! जहि विधे ॥

(७५)

पाँयपीर पेटपीर बाहुपीर मुँहपीर,
 जरजर सकल शरीर पीरमई है ।
 देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,
 मोहिं पर दवरि दमानक सी दर्द है ॥
 हौं तो बिन मोल ही बिकानो बलि बारेहीतें,
 ओट राम नाम की ललाट लिखि लई है ।
 कुंभज के किंकर बिकल बूढ़े गोखुरनि,
 हाय रामराय ऐसी हाल कहूँ भई है ॥

पैर में दर्द, पेट में दर्द, मुँह में दर्द, बाँह में दर्द, पीड़ामय
 होकर शरीर जर्जर हो गया है । देवता, भूत, पितर, कर्म, काल,
 ग्रह, और दुष्टों ने एक साथ मुझ पर तोपों की बाढ़ सी छोड़ दी
 है । बलि जाता हूँ मैं तो बचपन से ही बेमोल बका हूँ और
 राम नाम की ओट ललाट पर लिख ली है । समुद्र पान करने
 वाले अगस्त्य का दास जैसे गौ के खुर के बराबर जल में व्याकुल
 डूबता हो, वैसी ही मेरी दशा है । हे राजा राम, ऐसा भी कहीं
 हुआ है ?

[३८]

पद चलवा मे व्यथा

उदर बाहु क बहु पीड़ा ।

जर्जर सकल शरीर

बिरुख मुख रोग क कीड़ा ॥

बुझि पड़इछ जत देव-पितर

सभ कुपित भेल अछि ।

ग्रह विग्रह भौतिक वैदिक

दुख बलित भेल अछि ॥

राम नाम सिर धय, अहँक

क्रीत दास भेलहुँ जखन ।

कुंभज किंकर दुवय की

गोपद - जल किन्नहु तखन !

(७७)

बाहुक - सुबाहु नीच लीचर मरीच मिलि,
 मुँहपीर - केतुजा कुरोग जातुधान हैं ।
 रामनाम जप जाग कियो चाहौँ सानुराग,
 काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं ॥
 सुमिरे सहाइ रामलषन आखर दोड,
 जिनके साके समूह जागत जहान हैं ।
 तुलसी सँभारि ताड़का सँहारि भारी भट,
 बधैं बरगद से बनाइ बानबान हैं ॥

बाँह का शूल नीच सुबाहु है, शरीर की क्षीणता जैसे मारीच,
 मुँह की वेदना ताड़का है, तो अन्य रोग और राक्षस हैं । मैं
 प्रेम से रामनामजप-रूपी यज्ञ करना चाहता हूँ, उसमें ये सब
 मिलकर विघ्न कर रहे हैं । ये काल के समान भूत दूत मेरे वश
 के नहीं । स्मरण करने से रामनाम के रामलक्ष्मण रूपी दो
 अक्षर मेरे सहायक हुए, जिनकी कीर्ति जगत में प्रसिद्ध है ।
 दोनों ने ताड़का को मारा और फिर भारी भारी योद्धाओं को
 वाण से बरगद के फल के समान बंध डाला । रामनाम ने अपने
 प्रताप से तुलसीदास के रोगरूपी राक्षसों का नाश किया ।

[३६]

बाहु क पीडा असुर सुबाहु

देह

दुर्बलता ।

मिलि मारीच नीच, मुह-

पीडा

प्रबल

ताडका ॥

करइछ जीवन - यज्ञ विघ्न

नामहु

जप

बाधा ।

इत भूत विकराल काल जनु

प्रभु

पद

साधा ॥

राम - लखन आखर दुहु

तुलसी करु सुमिरन सुमन ।

भट उद्भट शर निकर हति

उत्पीडक, दुख द्रुत शमन ॥

(७६)

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
 रामनाम लेत माँगि खात दूकटाक हौ ।
 पर्यौ लोक रीति में पुनीत प्रीति रामराय,
 मोह बस बैठो तोरि तरकि तराक हौ ॥
 खोटे खोटे आचरन आवरत अपनायो,
 अंजनी कुमार सोध्यो रामपानि पाक हौ ।
 तुलसी गुसाई भयो भोंडे दिन भूलि गयो,
 ताको फल पावत निदान परिपाक हौ ॥

बचपन में सीधे मन से श्रीराम के सामने हाजिर हुआ, राम नाम लेता हुआ उनसे माँग खाता था । बाद में लोकाचार में पड़कर श्रीराम के पवित्र प्रेम के बन्धन को एकाएक तोड़ बैठा और बुरे-बुरे काम करते करते उन्हें ही अपना बैठा । फिर जब अञ्जनीकुमार, हनुमान ने खबर ली और श्रीराम के हाथ से मुझे पवित्र किया तो मैं मात्र तुलसी से गोस्वामी बन गया और अभिमानवश अपने बुरे दिन भूल गया जिसका अन्तिम फल आज अच्छी तरह पा रहा हूँ ।

[४०]

बाल वयस चित सहज

गहल राम क शुभ नामे ।

माडि चाडि भरि उदर

भाड सँ तुलसी ठामे ॥

लोक रीति अनरीति, प्रीति

राम क बिसरल धुनि ।

अघी नीच-रुचि केँ अपनाओल

पवन - पूत पुनि ॥

तदपि गोसाईँ कहाय जग

सौँइ क रहल न ध्यान पुनि ।

इन्त ! अन्त तेँ दशा ई

पाप क कटु परिपाक गुनि ॥

(८१)

असन बसन हीन विषम विषाद लीन देखि,
 दीन दूबरो करै न हाय हाय को ।
 तुलसी अनाथ सों सनाथ रघुनाथ कियो,
 दियो फल शीलसिंधु आपने सुभाय को ॥
 नीच यहि बीच पति पाइ भरुआइ गो,
 विहाय प्रभु भजन वचन मन काय को ।
 तार्ते तन पेषियत घोर वरतोर मिस,
 फूटि फूटि निकसत लोन रामराय को ॥

मुझे भूखा, नंगा, कठिन दुःख में पड़े दीन दुर्बल को देखकर
 कौन ऐसा था जो हाय हाय न करता था ? ऐसे अनाथ तुलसी-
 दास को श्रीराम ने स्वयं सनाथ किया और अपने शील स्वभाव
 का फल शील के सागर ने दिया । इसी बीच यह नीच तुलसी-
 दास प्रतिष्ठा पाकर फूल उठा और मन कर्म वचन से प्रभु का
 भजन छोड़कर शरीर पोसने लगा । इसी से इस बलतोड़ घाव
 के बहाने श्रीराम का नमक फूट फूट कर निकल रहा है ।

[४१]

अशन बसन नहि, दीन-खीन

चित चिन्ता आतुर ।

देखि दुखी हमरा, के नहि

छल चिन्ता कातर ॥

एहन अनाथ दास

तुलसी केँ कयल सनाथे ।

सहज दयामय शील - सिन्धु

स्वामी रघुनाथे ॥

तदपि नीच एहि बीच ई

अति कृतघ्न विसरल भजन ।

हन्त ! विषम ब्रन बनि फुटल

श्रीरघुराज क अटन लबन ॥

(८३)

(४२)

जीबों जग जानकीजीवन को कहाय जन,
मरिबे को वारानसी बारि सुरसरि को ।
तुलसी के दुहूँ हाथ मोदक है ऐसे ठाउँ,
जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिको ॥
मोको भूँठो साँचो लोग रामको कहत सब,
मेरे मन मान है न हर को न हरि को ।
भारी पीर दुसह शरीर तें बिहाल होत,
सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूरि करि को ॥

संसार में जीना है तो जानकीजीवन श्रीराम का सेवक
कहला कर जीऊँ और मरने के लिए तो यह बनारस और
गंगाजल है ही । ऐसे स्थान पर तुलसीदास के दोनों हाथ लड़्डू
हैं, जिसके जीने मरने का सोच करने को कोई लड़के भी नहीं
है । भूठ या सच, सब लोग मुझे राम का सेवक कहते हैं । मेरे
मन में शिव का सम्मान है न विष्णु का । असह्य पीड़ा से
शरीर व्याकुल है, उसे भी विना श्रीराम के कौन दूर कर सकता
है ?

(५४)

[४२]

जानकि जीवनहि क जन बनि

(जीबो माँ मिथिले !)

बा काशी सुरसरि तीरे

अनहि लहि विमले ॥

तुलसी मानस मुखर

उभय भल जीवन - मरने ।

जीनहु मुइनहु सोचय योग न

बाल अवल ने ॥

राम दास कह सत असत

हरि हर एको मान्य ने ।

असह देह पीडा हरथि

रघुवीरे क्यो आन ने ॥

(८५)

[४३]

सीतापति साहेव सहाय हनुमान नित,
हित उपदेस के महेस मनो गुरु कै ।
मानस बचन काय सरन तिहारे पायँ,
तुम्हारे भरोसे सुर में न जाने सुर कै ॥
व्याधि भूत जनित उपाधि काहू खल की,
समाधि कीजै तुलसी को जानि जन फुर कै ॥
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोगसिंधु क्यों न डारियत गायखुर कै ॥

श्रीराम मेरे स्वामी हैं, हनुमान नित्य सहायक हैं, जीव की भलाई हो ऐसा उपदेश करने वाले शिव को गुरु मानता हूँ । मन वचन और शरीर से तुम्हारे चरणों में हूँ, तुम्हारे भरोसे मैंने देवताओं को देवता कर नहीं जाना । किसी दुष्ट के उपद्रव से या भूत-जनित बाधा से मेरे इस रोग का, सच्चा सेवक जान, समाधान कीजिए । हे हनुमान, हे राम, हे भोलानाथ, भूतनाथ, रक्षा कीजिए, रोगरूपी समुद्र को गाय के खुर के समान कर डालिए ।

(८६)

जगत्पति क-जानकी पति क—

छी अहँ सहकारी ।

हित उपदेशक स्वयम्

शिवहि सरूपहि त्रिपुरसरी ॥

तन मन वचन सबहि लय

गहलहुँ शरण चरण टा ।

अहँक बल - भरोसहि

गनलहुँ नहि कोनो देवता ॥

भौतिक दैविक व्याधि वा

दुरित उपाधि असाध वा ।

रोग सिन्धु गोपद करिअ

कपि हरिहर रूपहि दवा ॥

(४४)

कहाँ हनुमान सो सुजान रामराय सं,
कृपानिधान शंकर सों सावधान सुनिये ।
हरष विषाद रोग रोष गुण दोष मई,
बिरचि बिरंघि सब देखियतु दुनिये ॥
माया जीव काल के कर्म के सुभाव के,
करैया राम वेद कहै साँची मन गुनिये ।
तुम तें कहा न होय हा हा सो बुझैये मोहि,
हौँ रहौँ मौन ही बयो सो जानि लुनिये ॥

मैं हनुमान जी से, परम चतुर राजाराम से कृपासिन्धु श्री शंकर जी से कहता हूँ मेरी बात सावधान होकर सुनिए । सारे संसार को देखता हूँ जिसे ब्रह्मा ने हर्ष-विषाद, रोष, गुण-दोष-मयी बनाया है, जीव, काल, कर्म, स्वभाव सबकी सृष्टि करमे वाले श्रीराम हैं, यह बात मन में विचार करने से सत्य मालूम होती है और वेद भी ऐसा ही कहते हैं । हे राम, तुम से क्या नहीं हो सकता, मेरी इस हाय - हाय को शान्त करो । मौन ही होकर रहूँ, जो बोया है उसी का फल पाऊँ ।

(८८)

श्री हनुमान सुनथु,
 भीरघुषति अन्तर्यामी ।
 शंकर कृपा निधान सुनथु
 मन दय अनुगानी ॥
 हर्ष - विषाद राग - रोषो
 रोगो गुण - दोषो ।
 सभ विरंचिहिक रचित
 सृष्टि देखी निर्धोखो ॥

सुख दुख कर्म - विषाक थिक
 रोपिअ से काटिअ महज ।
 श्रुति कह राम स्वतन्त्र छुथि
 कर्ता दुखहर्ता सहज ॥



चर्चित चरित्र-पात्रक नाम-संकेत

- राम—मर्यादापुरुषोत्तम, रामायणक मुख्य नायक, दृष्टदेव
सीता—रामजाया जानकी, रामायणक केन्द्रबिन्दु, दृष्टदेवी
लक्ष्मण—रामक अनुज मेघनादसंहर्ता प्रसिद्ध रामायणी वीर
शिव—त्रिदेवमे अन्यतम महादेव, हनुमानक अवतारबीज
विष्णु—त्रिदेवक पालनकर्ता पुगणपुरुष
कार्तिकेय—देवसेनापति शिव-गीरीक पुत्र षडानन
परशुराम—अंशावतार; २१ बेर क्षत्रियकुलसंहर्ता, भृगुवंशी
कृष्ण—पूर्णावतार, कंसध्वंसी, गीतागायक
अर्जुन—महाभारतक मध्यम पांडव कपिध्वज कृष्णसखा
भीष्म-द्रोण—महाभारत युद्धक कौरवपक्षीय सेनापति, पितामह, एवं पुरु
अंजनी—हनुमानजीक जननी, केसरीक पत्नी
इन्द्र—देवताक अधिपति, वज्रधर पूर्वदिक्पति
रावण-कुम्भकर्ण—रामायणक प्रतिनायक, युगल राक्षस बन्धु
मेघनाद-अक्षयकुमार—रावणक दूह योद्धा पुत्र
अंकम्पन सुबाहु-मारीच—रावणक सहायक प्रमुख असुरगण
सुरक्षा—सर्वमाता, हनुमानक बलक परीक्षिका
सिद्धिका—छायाग्राहिणी मायाविनी हनुमानक मार्गरोधिका
श्रीलंका—लंकाक अधिष्ठात्री रक्षिका

ताडका—पुबाहु मारीवक माय जे श्रीराम द्वारा मारलि गेलि
जाम्बवंत—रामायणक ऋक्षपति, हनुमानक प्रोत्साहनकर्ता
कंस, पूतना—भागवतक प्रसिद्ध कृष्णघिद्वेषी पात्र, कृष्णसं हत

प्रासङ्गिक स्थान श्री वस्तुक संकेत

द्रोण—पर्वत, उत्तरमे स्थित, ओषधिक प्रमुख स्थल

सुबेल—दक्षिणमे समुद्रक तटवर्ती पहाड़ी

कल्पवृक्ष—देवतरु, जकर छायातर इच्छानुकूल पदार्थ प्राप्त होइछ

कच्छप—पुराण प्रसिद्ध धराक आश्रय, कमठपीठ

कलियुग—सत्ययुग त्रेता द्वार ओ कलियुग (अन्तिमयुग)

माया—दिव्य शक्ति, अहंकार-ममकार जकरासं आच्छन्न आत्मा जीव
कहबैछ ।

जीव—मायासं आच्छन्न चिदंश

सुमन प्रकाशन

कतिपय प्रकाशित काव्य-रचना

१ अत्रता	१.२५	१४ अन्योक्तिका	१.००
२ प्रतिपदा	२.००	१५ मुक्ताश्ली	०.५०
३ साग्रोन्मादव	१.२५	१६ प्रकीर्ण शतक	१.००
४ पद्मस्विनी	३.००	१७ शृङ्गारहार	१.००
५ अङ्गावली	१.५०	१८ भारतवन्दना	०.५०
६ अनुगीताञ्जलि	२.००	१९ शिवमहिमा	०.४०
७ सनेस	०.५०	२० आनन्द लहरी	०.३५
८ शृङ्गार तिलक	०.२५	२१ ललना-लहरी	०.५०
९ चण्डी चर्या	०.५०	२२ शक्ति स्तवक	०.७५
१० ऋनुशृङ्गार	१.२५	२३ हरि स्मरणिका	०.३५
११ 'पुत्रोऽहं पृथिव्याः'	०.७५	२४ कवि-नवतिका	१.२५
१२ कथा-यूथिका	१.२५	२५ हितोपदेशिका	०.५०
१३ प्रकृति-शतक	१.००	२६ जतरा चाम्पाम	१.००
१७ अन्तर्नाद	१.५०	२८ गाम धरती
२६ सौन्दर्य-लहरी	२.००	३० हनुमानवाहुक	२.००

सम्पादितग्रन्थ

पुरुष-परीक्षा (मै० अनुवाद सहित)	५.००
रघुवंश : द्वि० सर्ग, सानुवाद)	.६५
कृष्णजन्म (निबन्धकाव्य : मनबोध)	१.००
आनन्द विजय (नाटिका : रामदास)	०.७५
पारिजातहरण (नाटक : उमापति)	०.७५

मैथिली मन्दिर : राजकुमारगंज : दरभंगा ।



मिथिला रिसर्च सोसाइटी लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yadugar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha 'Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy and dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha

9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

५

॥ श्री ॥

॥ बिज्ञापन ॥



* मिथिलारिसर्चसोसाइटी *

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः
स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्शिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तेकर अन्वेषण ओ सुद्धित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होयि, परस्पर सहायता करयि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीकें साहिय करयि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निर्रीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक सुद्धित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतअछि ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—

- (१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्ये उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय, एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो, तल्लवध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो । (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्ये एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय । एहि परिश्रमक बदलामे दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकेँ उक्त श्रीमान देयिन्ह । (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपे उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि ।
- ३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान नानोनूत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मिश्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि । ओ दरभङ्गाक कलैक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि । बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथ झा एम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा आदि सभासदगणमेँ सँ छथि ।
- ४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयव्यक निमित्त फीस एक रुपैया नियत कयलगेल अछि ।
- ५ उक्त विषय सम्बन्ध मेँ जाहि महाशय केँ पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि ।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभङ्गा ।